अन्धत्वाप्रकाशत्वयोः सामान्यविशेषभावाभावान्नार्थान्तरसंक्रमितवाच्यत्वम् ।

यहाँ ध्यातव्य है कि अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य में मुख्यार्थ-लक्ष्यार्थ में सामान्यविशेषभाव होने से व्याप्यव्यापकभाव होता है। मुख्यार्थ व्यापक होता है और लक्ष्यार्थ उसका व्याप्य होता है। अन्धत्व और अप्रकाशत्व में व्याप्यव्यापकभाव नहीं है अतः इस उदाहरण में अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य नहीं है बल्कि अत्यंततिरस्कृतवाच्य है।

यथा-

भम धम्मिअ वीसत्थो सो सुणओ अज्ज मारिओ देण ।

गोलाणइकच्छकुडङ्गवासिणा दरिअसीहेण ।।

('भ्रम धार्मिक ! विश्वस्तः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन ।

गोदानदीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन' ॥ इति संस्कृतम् ।)

जैसे – हे भगत जी! अब तुम निःशंक होकर घूमा करो। उस कुत्ते को जो तुम्हें तंग किया करता था आज गोदावरी नदी के किनारे उस कुंज में रहने वाले मस्त सिंह ने मार डाला। यहाँ पर वाच्यार्थ की विधि व्यंग्यार्थ में जाकर निषेध में परिणत हो जाती है।

अत्र 'भ्रम धार्मिक-' इत्यतो भ्रमणस्य विधिः प्रकृतेऽनुपयुज्यमानतया भ्रमणनिषेधे पर्यवस्यतीति विपरीतलक्षणाशङ्का न कार्या। यत्र खलु

विधिनिषेधावुत्पत्स्यमानावेव निषेधविध्यो: पर्यवस्यतस्तत्रैव तदवसरः । यत्र पुनः प्रकरणादिपर्यालोचनेन विधिनिषेधयोर्निषेधविधी अवगम्येते तत्र ध्वनित्वमेव।

यहाँ भ्रमण की विधि प्रकृत में अनुपयुक्त होने के कारण निषेध में परिणत होती है अतः यहाँ विपरीतलक्षणा की शंका नहीं होनी चाहिए। विपरीतलक्षणा वहीं होती है जहां विधि अथवा निषेध बोलने के साथ ही तुरंत विपरीत होकर निषेध या विधि रूप में परिणत हो जाये। जैसे 'यमयातनाओं से प्रेम है तो ईश्वर का भजन कभी मत करना'। इस वाक्य में भजन का निषेध विधिरूप (ईश्वरभजन) में परिणत हो जाता है। परंतु जहां विधि या निषेध प्रकरणादि का पर्यालोचन करने के अनंतर विपरीत अर्थ में परिणत हो वहाँ अभिधामूलक ध्वनि ही मानी जाती है, लक्षणा नहीं।

कहीं बाध्य अर्थात् विपरीत अर्थ में पर्यवसान होकर बाद में ख्याति अर्थात् अन्वयज्ञान होता है और कहीं ख्यात अर्थात् वाक्यार्थ में अन्वित पदार्थों का बाध (विपरीत अर्थ में पर्यवसान) होता है। यहाँ प्रथम पक्ष में लक्षणामूलक और दूसरे पक्ष में अभिधामूलक ध्वनि होती है।

तात्पर्य यह है कि जहां मुख्य अर्थ का अन्वय या तात्पर्य बाधित होता है वहीं लक्षणा हो सकती है, अन्यत्र नहीं। अतः जिन वाक्यों में पदार्थों का संबंध अनुपपन्न होता है वहीं लक्षणा और लक्षणामूलक ध्वनि होती है। इस प्रकार उपर्युक्त 'निःशंक घूमने' के उदाहरण में अभिधामूलक ध्वनि ही मानी जानी चाहिए।